केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
क.जे.सोमैयापरिसरः

विद्याविहारः, मुम्बई ७७

प्रतिवेदनम्

गुरुपूर्णिमोत्सवः सत्रारम्भश्च

(**दिनाङ्कः** – ०३.०७.२०२३ **समयः** – मध्याह्ने ०२.३० वादनतः ०४.३०)

मुख्यातिथिः – पण्डितः श्री. अनिलकुमारपाठकः

अध्यक्षः – प्रो.भारतभूषणमिश्रः

संयोजकः – प्रो. बोधकुमारझाः

सञ्चालकः – डॉ. संदीप वसन्त जोशी

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य क.जे.सोमैयापरिसरे गुरुपूर्णिमोत्सवस्य सत्रारम्भकार्यक्रमस्य च आयोजनं कृतम् । प्रातः ११.०० वादने डॉ.भरतगर्गमहोदयस्य संयोजने प्र.निदेशकवर्याणां हस्ताभ्यां सरस्वतीपूजनं यथाविधि सम्पन्नम् । परिसरस्य कर्मचारिणः छात्राः कार्यक्रमेऽस्मिन् भागम् अवहन् ।

मध्याह्ने ०२.३० वादने मङ्गलाचरणेन दीपप्रज्वलनेन च गुरुपूर्णिमोत्सवस्य कार्यक्रमः आरब्धः । छात्रैः गुरुपूजनं कृत्वा श्री जी. सागररेड्डीमहोदयस्य मार्गदर्शने गुरुगीतायाः चितानां श्लोकानां पारायणं कृतम् । अस्य कार्यक्रमे मुख्यातिथिरूपेण पण्डितः श्री. अनिलकुमारपाठकमहोदयः उपस्थितः आसीत् । महोदयः भाषणे तैत्तरीयोपनिषदः शिक्षावल्ल्याः छात्रदीक्षां बोधयित्वा गुरशिष्यपरम्परायाः महत्त्वम् उपस्थापितवान् । डॉ.वि.एस.वि. भास्कररेड्डीवर्यः शिक्षकस्य व्याख्याम् उपस्थाप्य साम्प्रतकाले गुरुशिष्यपरम्परायाः स्थितिविषये विचारान् उपस्थापितवान् । आध्यक्षीयभाषणे प्रो.भारतभूषणमिश्रवर्यः शिक्षकानां दायित्वम् उद्बोधितवान् । कार्यक्रमस्य स्वागतभाषणं डॉ.दशरथभरासागरमहोदयेन कृतम् । धन्यवादज्ञापनं कार्यक्रमस्य संयोजकेन प्रो.बोधकुमारझावर्येण कृतम् । मञ्चसञ्चालनं डॉ.संदीपजोशीमहोदयेन कृतम् । कार्यक्रमेऽस्मिन् परिसरस्य छात्राः स्वकीयविचारान् प्रस्तुतवन्तः ।

****

कार्यक्रमस्य चित्राणि

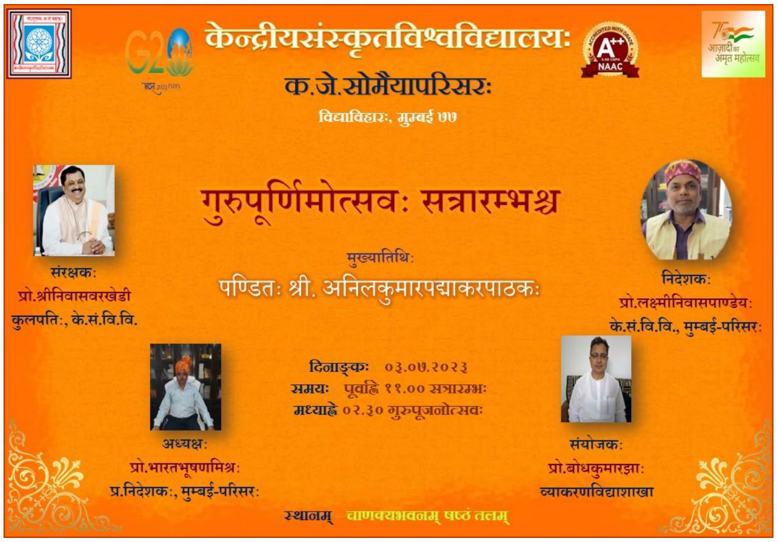

Row-5

दैनिक यशोभूमि

अपनी भाषा अपनी भूमि

वर्ष 28 . अंक 158 . मुंबई, बुधवार, 5 जुलाई 2023

मुंबई, ठाणे, पुणे और नासिक से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठ 12 . मूल्य 5.00 रुपये

गुरुपूर्णिमा महोत्सव का आयोजन

मुंबई (प्रति.), विद्याविहार पूर्व में स्थित केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, क. जे. सोमैया परिसर द्वारा चाणक्य सभागार में गुरुपूर्णिमा दिवस का आयोजन, माता सरस्वती के पूजन विधि से सत्र का उद्घाटन किया गया। यह पूजन विधि ज्योतिष विभाग के डॉ. भरत गर्ग एवं सहयोगियों द्वारा की गई। मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर पर भूतपूर्व संस्कृत शिक्षक वेदान्तमर्मज्ञ प. अनिल कुमार पाठक को शॉल, श्रीफल एवं सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि प. पाठक ने गुरु-शिष्य परम्परा पर अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि शिष्य-गुरु के दिशा-निर्देश में ही अपना उज्जवल भविष्य तय कर सकता है। इस अवसर पर वक्ता के रूप में शिक्षाशास्त्र के डॉ. वी.एस.वी. भास्कर रेड्डी तथा ज्योतिष के जी. सागर रेड्डी ने भी गुरु-शिष्य के बीच चर्चा के द्वारा ज्ञानवर्धन भावना को व्यक्त किया। गुरु-शिष्य के ह बीच ज्ञान के महत्व पर छात्र-छात्राओं ने सभी गुरुजनों को पुष्प एवं पेन देकर सम्मानित करते हुए अपने-अपने विचारों को व्यक्त किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए परिसर के प्रभारी निदेशक प्रो. भारत भूषण मिश्र ने कहा कि गुरु-शिष्य के बीच जो सम्बन्ध है वह पिता-पुत्र की तरह होता है। जिसका निर्वहन दोनों को अपने जीवन में नैतिक रूप में अपना कर करना चाहिए तभी इस परम्परा का महत्त्व बना रहेगा।

निदेशक: